तीतुस

तीतुस को लिखा गया पौलुस का पत्र

लेखकः

यीशु मसीह का सेवक पौलुस

समयः

लगभग 65 ए.डी.

विषयः

पौलुस ने तीमु. को लिखे गए पहले पत्र में चर्च के लोगों के चरित्र और सेवा के बारे में सिखाया था। उसने प्रेम के बारे में भी सिखाया था। उसी तरह इस चिट्ठी में भी परमेश्वर की महान कृपा के बारे में ज़ोर डालता है- 2:11-14; 3:3-6

1 परमेश्वर के सेवक और यीशु मसीह के
प्रेरित पौलुस की तरफ़ से मुझे इसलिये
भेजा गया ताकि मैं परमेशवर के चुने हुए
लोगों को विश्वास और सच्चाई की समझ
तक पहुँचा सकूँ जिससे वे एक सही(खरा)
जीवन जी सकें। 2उस सदा के जीवन की
उस आशा में जिसका वायदा परमेश्वर ने जो
झूठ नहीं बोल सकते दुनिया के आरम्भ से
पहले किया है। 3परमेश्वर और मुक्तिदाता
के आदेश के अनुसार जिस सुसमाचार को
ऐलान करने का काम मुझे दिया गया उसे
एक सही समय पर इतिहास में दिया गया।
4तीतुस को जो एक विश्वास की
सहभागिता में मेरा सच्चा बेटा हैः परमेश्वर
पिता और हमारे मुक्तिदाता मसीह यीशु से
कृपा और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।
5मैं इसलिए तुम्हें क्रेते में छोड़ आया था
कि तुम बाकी बातों को सुधारो और मेरी
आज्ञा के मुताबिक हर शहर में अगुवों को
ठहराओ। 6अगुवों (प्राचीनों) को बिना
किसी आरोप का और एक पत्नी का पति
और संयमी होना चाहिए। इन के बच्चों को
मुक्ति का अनुभव भी होना चाहिए। 7किसी
भी रखवाले (अध्यक्ष) को परमेश्वर का
भण्डारी होने की वजह से निर्दोष होना
चाहिए। ज़िद्दी, गुस्सैल, शराबी, झगड़ालू,
पैसों का लोभी नहीं होना चाहिए। 8और
आवभगत करने वाला भलाई और अच्छाई

1:1 रोमि. 1:1; गल. 1:1; 1 तीमु. 1:1 पौलुस का बड़ा काम था लोगों को यीशु के विश्वास में लाना और परमेश्वरीय सच्चाई को देकर उनके विश्वास को बढ़ाना या इसी में प्रोत्साहित करना। तुलना करें रोमि. 1:5,11,12. जिस सच्चाई का ऐलान पौलुस ने किया वह "पवित्र जीवन के अनुसार" - यह यीशु मसीह के प्रति सच्ची निष्ठा और पवित्रता के जीवन के लिए है (2:12)। कोई भी धार्मिक शिक्षा जो ऐसा नहीं करती है, झूठी है।

"परमेश्वर के चुने"- रोमि. 8:33; कुल. 3:12; यूहन्ना 6:37; 15:16; 17:6.

1:2 "सदा के जीवन"- यूहन्ना 3:16 पर नोट्स। कभी-कभी अनन्त जीवन, अभी हमारा है, यह दिखाया गया है (यूहन्ना 3:36; 5:24)। लेकिन इसका पूरा प्रगटीकरण और आनन्द भविष्य में है। इसलिए बाईबल इशारा करती है कि कुछ है जिसे बाद में अनुभव किया जा सकेगा (3:7; रोमि. 2:7 तुलना करें रोमि. 13:11; इब्रा. 6:12; 1 पतर. 1:5)।

"सदा के जीवन की आशा"- सच्चाई का ज्ञान और विश्वास, अनन्त जीवन की आशा पर नहीं टिके हुए हैं। एक परमेश्वर के सेवक के रूप में पौलुस का काम और प्रभु के लोगों का ज्ञान तथा विश्वास, ये सभी अनन्त जीवन की आशा से जुड़े हैं।

"झूठ नहीं बोल सकता"- इब्रा. 6:18; गिनती 23:19; 1 शमू. 15:29 यह कैसे संभव था कि इन्सान को बनाने से पहले प्रभु किसी बात का वायदा करें? वह ज़रूर यह प्रतिज्ञा अपने बेटे को दे सके होंगे। जिसे बाद में मानवजाति पर प्रगट किया गया।

1:3 "परमेश्वर...अनुसार"- इफ़ि. 3:2-9; 1 तीमु. 1:11; गल. 1:11-12.

"सही समय पर"- गल. 4:4; यूहन्ना 7:30; 1 तीमु. 6:15.

1:4 1 तीमु. 1:2.

1:5 यूनान के दक्षिण में भूमध्यसागर में क्रेते एक बड़ा टापू है।

"अगुवों"- देखरेख करने वाले। देखें 1 तीमु. 3:1 निस्संदेह चर्च में नए अगुवों को नियुक्त जैसे पहले किया जाता था वैसा ही किया गया होगा प्रे.काम 6:3-6.

1:6-9 एक अगुवे के गुणों को देखें। 1 तीमु. 3:2-7 में। इन में से कुछ गुण वहाँ नहीं हैं। एक अगुवे के सभी गुणों के लिए दोनों सूची देखने की ज़रूरत है।

"बच्चे"- अगुवों के बच्चों को न केवल आज्ञाकारी होना चाहिए (1 तीमु. 3:4-5) उन्हें मुक्ति का अनुभव होने के साथ ईमानदार होना चाहिए।

1:7 "ज़िद्दी"- दूसरों का ख्याल न रखने वाला, अपनी इच्छा को पूरा करवाने वाला।

"गुस्सैल"- एक अगुवा जो जल्दी ही गुस्सा करता है, दूसरों को आसानी से चोट पहुँचाता है।

का चाहने वाला, सही सोच वाला, खरा, पवित्र और संयमी भी। 9उसे विश्वसनीय वचन को थामे रहना चाहिए जैसा उसे सिखाया गया है, ताकि सही सिद्धान्त की मदद से, वह लोगों को सिखा सके, और वचन के विरोध में बहस करने वालों को यकीन दिला सके।

10बहुत से अनियन्त्रित लोग बहस करने वाले और धोखा देने वाले हैं, खासकर खतना वाले लोगों में से। 11इन के मुँह बन्द किये जाने चाहिए। ये लोग अपने फ़ायदे के लिए वह सब सिखाते हैं, जो सिखाना नहीं चाहिए और पूरे के पूरे खानदान बर्बाद कर डालते हैं। 12उन्हीं में से उनके एक भविष्यद्वक्ता ने कहा, "क्रेती लोग हमेशा से झूठे, दुष्ट पशु, आलसी और पेटू होते हैं।" 13यह बात सच है। इसलिए उन्हें अच्छी तरह से डाँटो, ताकि वे अपने विश्वास में मज़बूत रहें। 14यहूदी कथा-कहानियों और उन मनुष्यों की आज्ञाओं पर ध्यान न दें, जो सच्चाई से भटक चुके हैं। 15जो लोग शुद्ध हैं, उनके लिए सब कुछ शुद्ध है, लेकिन जो अशुद्ध और अविश्वासी हैं, उनके लिए कुछ भी शुद्ध नहीं है। उनकी

1:8 "भलाई और अच्छाई का चाहने वाला"- फ़िलि. 4:8-9 से मिलाएँ। अगर हम अच्छाई को नहीं चाहते हैं, तो बुराई को चाहते हैं और सेवा के योग्य नहीं हैं। मत्ती 12:35.

"सही सोच वाला"- 2:2,6; 2 तीमु. 1:7. एक चर्च के अगुवे को इच्छाओं का शिकार नहीं होना चाहिए।

"खरा"- 2:12 एक दुष्ट, अन्यायी अगुवा चर्च को नुकसान पहुँचाता है।

"पवित्र"- यदि एक अगुवा पवित्र नहीं है तो सही अगुवाई नहीं कर सकता है।

1:9 उसे इतना ज्ञान होना चाहिए कि पवित्र जीवन में मार्गदर्शन कर सके। गलत शिक्षा का उत्तर देना चाहिए।

"सही सिद्धान्त"- 1 तीमु. 1:3 में नोट्स देखें।

1:10 अनियन्त्रित लोग - बलवई लोग या आज्ञा न मानने वाले। ऐसे लोग परमेश्वर और आत्मिक अधिकार की खिलाफ़त करते हैं। 2 तीमु. 2:3-4; इब्रा. 3:8-12; व्यव. 9:7-24; 31:27; यहोशू 22:18; 1 शमू. 15:23; भजन 78:40,56; यशा. 1:2,20.

"बहस करने वाले"- 1 तीमु. 1:6. बहुत से लोग मसीही मत के बारे में बातें करना चाहते हैं, लेकिन उनके पास कुछ खास कहने के लिए नहीं है।

"धोखा देने वाले"- मत्ती 24:24; रोमि. 3:13; 16:18; 2 कुरि. 11:13; इफ़ि. 4:14; 1 पतर. 3:10; प्रका. 21:27; भजन 50:19; 51:6; 101:7; यिर्म. 14:14.

"खतना वाले लोगों में से"- शायद पौलुस का मतलब उन यहूदियों से था, जो अपने आपको यीशु का अनुयायी कहते थे (गल. 2:12; प्रे.काम 15:1,5)

1:11 "मुँह बन्द"- ऐसे लोगों को सिखाने की इजाज़त नहीं दी जानी चाहिए। उनकी शिक्षाओं का सामना किया जाना चाहिए (पद 9) उन्हें कड़ी डाँट मिलनी चाहिए।

"अपने फ़ायदे"- पद 7; 1 तीमु. 6:5,9,10.

"खानदान"- झूठे शिक्षक प्रायः अपनी शिक्षा को फैलाने एक घर से दूसरे घर जाते हैं (2 तीमु. 3:6)।

1:12-13 "क्रेती"- पद 5 एक कवि के बारे में ये शब्द कहे गए हैं। पौलुस खुद यह जानता था। दुनिया के हर देश में कुछ सामान्य बाते हैं, जो उनके सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि से बनती हैं। चरित्र के यह गुण उन लोगों के लिए स्पष्ट हैं, जो लोगों को अच्छी तरह जानते हैं।

1:13 "विश्वास...रहें"- जो दूसरों को डाँटते हैं, उनके पास सही उद्देश्य होना चाहिए तुलना करें 2 तीमु. 2:24-26.

1:14 "कथा"- 1 तीमु. 1:4

"आज्ञाएँ"- कुल. 2:21-22 कुछ लोग, हालाँकि कोई अधिकार नहीं है, फिर भी दूसरे मसीहियों पर अपना अधिकार जमाते हैं।

1:15 "पवित्र"- लूका 11:41; मरकुस 7:15,19; रोमि. 14:20; 1 तीमु. 4:3-5; मत्ती 5:8; 6:22-23.

"अपवित्र"- बहुत से धार्मिक लोग जो भीतर से भ्रष्ट हैं बाहरी नियमों और रीतियों और शुद्ध अशुद्ध खाने के बारे में बहुत बोलते हैं। मत्ती 23:25-28. पौलुस कहता है कि ऐसे लोगों के लिए कुछ भी पवित्र या शुद्ध नहीं है। जो लोग यीशु का इन्कार करते हैं वे जो कुछ भी छूएँगे, अशुद्ध हो जाएगा।

बुद्धि और विवेक दोनों ही अशुद्ध हैं। 16वे
तो मुँह से परमेश्वर को जानने का दावा
करते हैं लेकिन उनके कामों को देखकर
ऐसा नहीं लगता है। वे घिनौने, आज्ञा न
मानने वाले और अच्छे कामों के लायक
ही नहीं हैं।

2 परन्तु जो बातें सही शिक्षा के अनुसार हैं,
तुम उन्हीं को कहा करो। 2बुज़ुर्ग लोगों
को गंभीर, आदरणीय, संयमी, विश्वास,
प्रेम और धीरज में मज़बूत होना चाहिए।
3उसी तरह बुज़ुर्ग महिलाएँ भी व्यवहार में
आदरणीय, बदनामी न करने वाली, शराब
से परे रहने वाली और अच्छी बातें सिखाने
वाली हों 4ताकि वे जवान महिलाओं को
सिखाएँ कि वे पतियों और बच्चों से प्रेम
करने वाली हों। 5संयमी, पवित्र घर का
देखभाल करने वाली, भली और पति की
आज्ञा मानने वाली बनें, ताकि प्रभु के संदेश
की बदनामी न हो।

6इसी तरह से जवान लोगों को संयमी
बनने को कहो। 7हर दायरे में दूसरों के लिए
अच्छे नमूना बनो। शिक्षा में ईमानदारी,
गंभीरता, पवित्रता, 8सही बोलचाल, जिसे
कोई खराब न कह सके ताकि तुम्हारे
विरोधी शर्मिंदा हों और तुम्हारे खिलाफ़
कहने के लिए उनके पास कुछ भी न हो।

9नौकरों को आदेश दो, कि वे अपने-
अपने मालिक की मानें और उन्हें हर बात
में पूरी तरह खुश रखें और पलट कर जवाब
न दें। 10चोरी न करें लेकिन विश्वसनीय
हों, ताकि हमारे परमेश्वर और मुक्तिदाता
की शिक्षा की सुन्दरता बढ़े।

11क्योंकि परमेश्वरीय कृपा जिसके

"विवेक"- प्रे.काम 23:1; 24:16; 1 कुरि. 8:7; 1 तीमु. 1:5,19; 4:2; इब्रा. 9:14.

1:16 बहुत से लोग परमेश्वर के ज्ञान का दावा करते हैं, लेकिन इन्हें वह ज्ञान नहीं है - यूहन्ना 8:41; रोमि. 2:17

2:1 पद 15; 1:9; 1 तीमु. 1:3 गलत शिक्षा के खिलाफ़ सही हथियार सच्चाई को सिखाना है।

2:2-10 अच्छी शिक्षा लोगों की खास ज़रूरतों या अलग वर्ग के लोगों की कमज़ोरियों के योग्य होती है। चर्च के शिक्षकों को हर इन्सान की ज़रूरत के मुताबिक सिखाना चाहिए।

2:2 "प्रेम"- वह प्रेम जो प्रभु परमेश्वर से आता है (1 कुरि. 13:1)

"धीरज से मजबूत"- रोमि. 5:3-4; 15:4-5; 2 कुरि. 1:6; कुल. 1:11; 1 थिस्स. 1:3; प्रका. 1:9.

2:3 "बदनामी"- यदि मसीही महिलाएँ अपने पति के खिलाफ़ बलवई, कठोर और अपवित्र हों, उनकी बदनामी के साथ बाईबल का भी नाम खराब होगा, जिस पर चलने का वे दावा करती हैं। हमेशा यह पौलुस की एक चिन्ता थी - 1 तीमु. 6:1

"अच्छी बातें"- शायद पौलुस मसीह जीवन के सिद्धान्तों की नहीं, व्यवहारिक बातों की बात कर रहा है।

"सिखाने वाली" - तुलना करें 1 कुरि. 14:3-4; 1 तीमु. 2:11-12 मसीह महिलाएँ सिखाने का काम काफ़ी अच्छी तरह से कर सकती हैं।

2:6 "संयमी"- यह नवजवान व्यक्ति के लिए संभव है कि वह अपनी बोलचाल और बर्ताव में अनियन्त्रित हो। उन में से बहुतों को यह सीखने की जरूरत है - इसका मतलब यह नहीं है कि अधिक उम्र वालों को संयम की ज़रूरत नहीं है।

2:7-8 दूसरों को सच्चाई सिखाना काफ़ी नहीं है। शिक्षकों को एक नमूना होना चाहिए - 1 तीमु. 4:12.

2:8 "विरोधी शर्मिन्दा"- 1 पतर. 3:16. हमेशा बाईबल सिखाने वालों का विरोध करने वाले होंगे जो खिलाफ़त में बोलने का बहाना ढूँढते हैं। इसलिए शिक्षकों को अपने कहने और करने दोनों में सतर्कता बरतनी चाहिए।

2:9-10 इफ़ि. 6:5-8; 1 तीमु. 6:1-2.

2:10 "विश्वसनीय"- इफ़ि. 4:28; लूका 16:10.

"शिक्षा...बढ़े"- हर विश्वासी को चाहिए कि यीशु के संदेश को खूबसूरती से पेश करे, ताकि लोग इसे कबूल करना चाहें तुलना 1 पतर. 2:9; मत्ती 5:16.

2:11 3:4-6; इफ़ि. 2:8-9; रोमि. 6:23.

"कृपा"- यूहन्ना 1:14,16; रोमि. 1:7; 2 कुरि. 8:9.

कारण मुक्ति है, सभी लोगों के लिए प्रगट
हुई है, 12और हमें सिखाती है कि हम
दुष्टता और दुनिया की अभिलाषाओं को
छोड़कर, गंभीरता, खराई और परमेश्वरीय
स्वभाव के साथ वर्तमान युग में जियें,
13और बड़ी आशा अर्थात् परमेश्वर और
मुक्तिदाता यीशु के महिमामय दूसरे आगमन
का इन्तज़ार करते रहें। 14जिन्होंने अपने
आपको हमारे लिए दे दिया ताकि हमें हर
तरह की दुष्टता से छुड़ाएँ और पवित्र करके
अपने लिए खास लोगों को तैयार करें जो
अच्छे काम करने में सरगर्म हों।
15इन बातों को सिखाया करो, हिम्मत
बढ़ाओ और अधिकार के साथ डाँटो।

"मुक्ति"- मत्ती 1:21 और रोमि. 1:16 के नोट्स।

"कृपा जिसके कारण मुक्ति है"- दूसरे शब्दों में लोगों की मुक्ति के लिए परमेश्वरीय कृपा प्रगट हुयी है। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी लोग मुक्ति पाएँगे, लेकिन यह कि मुक्ति सभी जगहों के सभी लोगों के लिए है - गुलाम और मालिक, जवान व बूढ़े, पुरूष और महिला, यहूदी और गैरयहूदी।

2:12 परमेश्वरीय कृपा बुद्धिमान शिक्षक की तरह है। यह विश्वासियों को सिखाती है कि कैसे जियें और कैसे नहीं। यह ऐसा नहीं है, क्योंकि मैंने तुम्हें मुक्ति दी है, अब जीओ, जैसा जीना है। रोमि. 6:1,15-18; इफ़ि. 4:22-24. यह हमें सिखाता है कि हम गुनाह, अहम् और शैतान को 'न' कहें। भलाई, सही जीवन और परमेश्वर को हाँ। अगर हम ने यह सब नहीं सीखा है, तो हम पूछें क्या कृपा हमारा गुरू है? क्या कृपा से हम बचे हैं? कृपा के आधार पर जीना सबूत है, कि मसीह में हमारे पास आत्मिक जीवन है

"दुनियावी अभिलाषाओं"- । देखें 1 यूहन्ना 2:15-17; 5:19; रोमि. 12:1-2 पर नोट्स भी

"गंभीरता से"- यूनानी शब्द का मतलब है बहुत समझदारी से, विचारों को वश मे रखते हुए।

2:13 "बड़ी आशा"- आशा पर रोमि. 5:2; 8:24-25 के नोट्स। यीशु खुद हमारी आशा हैं (कुल. 1:27; 1 तीमु. 1:1) और जैसा हम यीशु के होने के नाते इच्छा रखते हैं हमारी कामना पूरी होगी।

"परमेश्वर और मुक्तिदाता"- यह अनुवाद यूनानी अनुवाद और बाईबल में मसीह यीशु के बारे में पूरी शिक्षा के अनुकूल है। फ़िलि. 2:6 देखें। ओल्ड टेस्टामेन्ट में प्रभु (याहवे परमेश्वर) मुक्तिदाता हैं (यशा. 49:26; 60:16)। न्यू टेस्टॉमेंन्ट में यीशु मुक्तिदाता हैं। दूसरे शब्दों मे यीशु देहधारी परमेश्वर हैं (देखें लूका 2:11 में नोट्स)।

"दूसरे आगमन"- हम इसे कह सकते हैं, महिमा का प्रगट होना। देखें मत्ती 16:27; 24:30; 25:31. ध्यान से देखें पौलुस कहता है कि वह और दूसरे विश्वासी शान के साथ मसीह के आने की प्रतीक्षा में रहे। यहाँ इसका मतलब गुप्त द्वितीय आगमन नहीं है।

2:14 "हमारे लिए दे दिया"- रोमि. 5:8; 2 कुरि. 5:21; गल. 2:20; इब्रा. 9:28; 1 पतर. 2:24; 3:8.

"दुष्टता"- मत्ती 1:21; गल. 1:4; इब्रा. 13:12.

"छुड़ाएँ"- भजन 78:35; 130:8; मत्ती 20:28; रोमि. 3:24; इफ़ि. 1:7; कुल. 1:14; इब्रा. 9:12,15; 1 पतर. 1:18.

"पवित्र करें"- इफ़ि. 5:25-27; यूहन्ना 15:3; इब्रा. 9:14; 1 यूहन्ना 1:7,9; 2 कुरि. 7:1 तुलना करें यहेज. 37:23. यूहन्ना 17:17-19; और लैव्य. 20:7 मे पवित्रता पर नोट्स

"अच्छे काम करने में सरगर्म"- मत्ती 5:16; रोमि. 12:11; इब्रा. 13:6; 1 तीमु. 6:18. हमें प्रभु कैसा देखना माँगते हैं, इसके बारे में बताया गया है। यह इन्सान के बुरे स्वभाव के बिल्कुल खिलाफ़ है। यह स्वभाव बुरा करने को तत्पर रहता है। यीशु के लोगों मे भला स्वभाव है और हमें अच्छा करने के लिए बाहरी दबाव की ज़रूरत नहीं है।

भलाई के लिए हमें हिचकिचाना नहीं चाहिए। भलाई करने की इच्छा हमारे मन में स्वाभाविक रीति से निकलनी चाहिए। यह भी इस बात का चिन्ह है कि हम कृपा से बच गए हैं और सीखते भी जाते हैं - मत्ती 7:17-20; 12:33-35; इब्रा. 6:9-11.

2:15 "सिखाया करो"- पद 11-14 मुक्ति के बारे में पौलुस ने कई बातों को सामने रखा प्रभु की कृपा, अपनी इच्छा का त्याग और प्रभु के प्रति समर्पण, यीशु मसीह का फिर से आना, मसीह का परमेश्वरत्व, मसीह से मुक्ति, प्रभु के लोगों का शुद्धिकरण, मसीहियों का जीवन आदि। ये बातें है, जिन्हें हर एक मसीही शिक्षक और संदेशवाहक को बताते रहना चाहिए। यदि कोई इन के खिलाफ़ सिखाए, तो उसमें सच नहीं है।

"अधिकार"- 1 तीमु. 4:11-13; 1 पतर. 4:11

तुम्हें कोई तुच्छ न समझने पाए।

3 जो लोग शासन करते हैं या अधिकारी
हैं, उनके प्रति आज्ञाकारी होने और
अच्छे काम करने को तैयार रहने के लिए
लोगों से कहो 2किसी की बुराई न करें,
झगड़ालू न हों, लेकिन कोमल स्वभाव रखें
और दूसरों के साथ नम्रता से पेश आएँ।
3क्योंकि पुराने जीवन में हम भी बेवकूफ़,
आज्ञा न मानने वाले, धोखे में, तमाम
अभिलाषाओं में और सुखविलास की चाह
रखते हुए, कड़वाहट, ईर्ष्या और नफ़रत
की ज़िन्दगी जीते थे। 4लेकिन जब हमारे
परमेश्वर और मुक्तिदाता की दया और
मोहब्बत लोगों के लिए प्रगट हुयी, 5तो
उन्हों ने हमें मुक्ति दी जो हमारे धर्म-कर्म
से नहीं लेकिन उन्हीं की कृपा द्वारा नए
जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के नए
बनाने से थी। 6जिसे उन्हों ने बहुतायत
से हमारे मुक्तिदाता यीशु द्वारा हम पर
उण्डेली। 7इसलिए कि उनकी कृपा से
धर्मी (निर्दोष) ठहराए जाने से हम अनन्त
जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।
8यह बात सच है और मैं चाहता हूँ कि,

3:1 रोमि. 13:1-7.

3:2 रोमि. 12:16-18; गल. 5:22-23; इफ़ि. 4:31-32; फ़िलि. 2:3; कुल. 3:12; याकूब 3:13.

3:3 "हम भी"- रोमि. 3:9-19; इफ़ि. 2:1-3 ध्यान दें उन शब्दों पर जो उनके बारे में है, जो न यीशु को जानते हैं, न उनकी सेवा करते हैं।

"बेवकूफ़"- भजन 14:1; यिर्म. 5:21-22; 10:8; मत्ती 7:26; रोमि. 1:21-22.

"आज्ञा...वाले"- रोमि. 5:19; 10:21; 11:30-32; इफ़ि. 2:2; 5:12; यशा. 1:2; यिर्म. 5:23.

"धोखे में"- उत्पत्ति 3:13; यिर्म. 17:9; 1 कुरि. 12:2; 2 तीमु. 3:13; इब्रा. 3:13; प्रकाशित 12:9

"तमाम...हुए"- यूहन्ना 8:34; रोमि. 6:16-17; 7:14; गल. 4:3; इब्रा. 2:15 इन चार तरह की बेवकूफ़ी की ताकतों - बेवकूफ़ी, अनाज्ञाकारिता, धोखा और मज़ा करने आदि की गुलामी का क्या नतीजा होगा? इन्सानों को या दुष्टात्माओं को जो सब से बुरी लत हो सकती है वह है - कड़वाहट (भजन 28:3) ईर्ष्या (मत्ती 27:18); नफ़रत (लैव्य. 19:17)

3:4 "लेकिन"- रोमि. 3:21; इफ़ि. 2:4 से तुलना करें।

"हमारे परमेश्वर और मुक्तिदाता"- 1 तीमु. 1:1 पर नोट्स।

"कोमलता और मोहब्बत"- यूहन्ना 3:16; रोमि. 2:4; 5:8; गल. 2:20; इफ़ि. 2:7; 1 यूहन्ना 3:16; 4:8-10.

3:5 कृपा - इफ़ि. 2:4; 1 पतर. 1:3; 2:10. इसका मतलब है कि प्रभु ने हमें ही आत्मिक ज़रूरत और असहाय हालत में देखा। हम पर कृपा की। हमें बचाया, हालाँकि हम किसी अच्छी बात के लायक नहीं थे। तुलना करें लूका 18:13-14; रोमि. 6:23; 9:16,18; 11:32; इफ़ि. 2:8-9; 2 तीमु. 1:9.

"नए जन्म के स्नान"- इफ़ि. 5:26. यह नया जन्म और पुर्नजन्म एक ही नहीं हैं (अय्यूब 11:12; यूहन्ना 3:3; 9:3) "स्नान" का मतलब बपतिस्मे से नहीं है। नया जन्म खुद स्नान है, और परमेश्वर का भीतरी आत्मिक काम है एक बाहरी प्रथा नहीं। यह परमेश्वर का काम हमें एक नया, पवित्र स्वभाव देता है। देखें यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8; 2 कुरि. 5:17; इफ़ि. 2:5; याकूब 1:18; 1 पतर. 1:3 तुलना करें यहेज. 36:26-27.

"पवित्र आत्मा"- यूहन्ना 14:16-17 के नोट्स और प्रे.काम 1:5 के नोट्स। पवित्र आत्मा हमें नया जन्म देने के साथ नया बनाना जारी रखता है।

"नए बनाने से"- कुल. 3:10; इफ़ि. 4:23-24; 2 कुरि. 4:16.

3:6 उण्डेला - प्रे.काम 1:5,8; 2:4,33; 10:44; रोमि. 8:9,15.

"मुक्तिदाता"- पद 4; 1 तीमु. 1:1.

"यीशु द्वारा"- मसीह के द्वारा प्रेम हमें पवित्र आत्मा देता है सिर्फ़ उन्हें जो मसीह पर विश्वास करते हैं (गल. 3:1-2,14;)।

3:7 "निर्दोष ठहरना"- रोमि. 3:21-26 पर नोट्स।

"अनन्त जीवन की आशा"- 1:2.

"वारिस"- रोमि. 8:17; 1 कुरि. 6:9; 15:50; इफ़ि. 1:14; इब्रा. 9:15; 1 पतर. 1:3-5.

तुम ये बातें लगातार ऐलान करो ताकि जिन लोगों ने परमेश्वर पर भरोसा कर लिया है, वे भले कामों में लगे रहें। ये बातें अच्छी हैं और लोगों के लिए फ़ायदेमंद हैं।

9लेकिन बेवकूफ़ी के विवाद, वंशावलियों और व्यवस्था (नियमशास्त्र) के मतभेद वाले विषयों और झगड़ों से दूर रहें, जो बिना लाभ के और बेकार हैं। 10ऐसे इन्सान से दूर रहो, जो एक दो बार मना किए जाने के बावजूद सच्चाई के साथ झूठ की मिलावट में बना रहता है। 11यह जान लो कि ऐसा व्यक्ति टेढ़ा है, गुनाह में है और खुद ही दोषी ठहर चुका है।

12जब मैं अरितिमास या तुखिकुस को तुम्हारे पास भेजूँ, निकापुलिस में मुझ से भेंट करने की हर कोशिश करना, क्योंकि मैंने सर्दियों में वहाँ रहने का इरादा किया है। 13जन्नेस वकील, और अपुल्लोस को उनकी यात्रा पर जल्दी भेजना, ताकि उन्हें किसी चीज़ की कमी न हो। 14हमारे लोगों को भी सीखना चाहिए कि भले कामों में लगे रहें, ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सही कामों में लगे रहना सीखें, ताकि उनका जीवन निकम्मा न हो।

15मेरे साथियों का तुम्हें आशीर्वाद, और जो हम से प्रेम करते हैं, उन्हें आशीर्वाद। आमीन

3:8 "ये बातें"- 2:15.

"भले"- 2:14; याकूब 2:14.

3:9 देखें 1:13-14; 1 तीमु. 4:7; 6:4; 2 तीमु. 2:14-16,23,24 पौलुस कह रहा है कि संदेश देने वालों और शिक्षकों को अपने खास काम (सच्चाई का ऐलान) करने से रूकना नहीं चाहिए। खुशी की खबर के केन्द्र को पकड़े हुए उन्हें चाहिए कि लोगों को मज़बूत करने की शिक्षा दें। पद 8 और 9 में देखें कि आत्मिक रूप से क्या फ़ायदेमंद है और क्या नहीं।

3:10 "झूठ"- एक विश्वास, विचार या शिक्षा जो बाईबल की शिक्षा के खिलाफ़ है। यहाँ यूनानी शब्द "बटा हुआ इन्सान" - भी कहा जा सकता है। क्योंकि ऐसी शिक्षा ऐसा ही करती है। तुलना रोमि. 16:17. पौलुस का इशारा उनकी तरफ़ है जो गलत सिखाकर चर्च को तोड़ने की कोशिश करते हैं, पौलुस ने सभी जगह ऐसे लोगों को पाया और विश्वासियों को चेतावनी दी - प्रे. काम 20:29-30; गल. 1:7; 1 तीमु. 1:3-4. ऐसे लोगों को चेतावनी दी जानी चाहिए - यदि दो बार चेतावनी दिए जाने के बाद वे न सुनें, उन्हें छोड़ देना चाहिए। उनके साथ फिर व्यवहार बंद कर देना चाहिए - रोमि. 16:17.

3:11 परमेश्वर के सेवकों की गंभीर चेतावनी को दुत्कारने की वजह से यह सिद्ध हो जाता है कि व्यक्ति पाप से भरा है, टेढ़ा मन है और सत्य को नहीं चाहता है।

3:12 "तुखिकुस"- प्रे.काम 20:4; इफ़ि. 6:21; कुल. 4:7; 2 तीमु. 4:12. संदेशवाहकों और शिक्षकों का एक झुण्ड था जो पौलुस की अगुवाई और मार्गदर्शन में काम करता था। ये लोग जगह-जगह जाया करते थे। "निकापुलिस"- रोमी साम्राज्य में इस नाम के तमाम शहर थे। हमें नहीं मालूम यहाँ किस की बात कर रहा है।

3:13 "अपुल्लोस"- प्रे.काम 18:24-28.

3:14 भला करने के बारे में यहाँ ज़ोर देखें पद 1,8; 1:16; 2:7,14. प्रभु चाहते हैं कि हम दूसरों की भलाई की सोचें - अपने आप को पूरी तरह से इसके लिए दे दें। यहाँ "ज़रूरतों" का मतलब दूसरों की और अपनी ज़रूरतों से हो सकता है - प्रे.काम 20:35; रोमि. 12:13; इफ़ि. 4:28.

"निकम्मा"- तुलना करें यूहन्ना 15:8,16.

3:15 "जो...हैं"- जो हमसे प्रेम करते हैं क्योंकि वे और हम मसीह पर भरोसा करने वाले हैं।